दिनांक 24 जुलाई, 1984

सं० ओ.वि/एफ.डी./1/31-84/25835. -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. ओरियन्ट लैनिनेटिंग कं०, प्लाट न० 345, सैक्टर-24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री खेम राज तया उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित आमले में कोई श्रीधोगिक विवाद है ;

श्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्याय निर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं .--

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की बारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी अधिसूचना ए० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवाद्यस्त या उसते सुमंगत या उसते संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनणेय के लिए निदिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत प्रथश संबंधित मामला है: -

क्या श्री खेम राज की सेवाधों का समापन न्यायोचित तया ठीक है? यदि नहीं, तो वह किसी राहत का हकदार है?

सं० ग्रो. वि./जी.जी.एन./67-84/25842--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. इम्पीरियल माल्टस प्रा० लिं० गुड़गांवा के श्रमिक श्रो ग्रार. के. शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5413-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो किए उक्त प्रवत्रधकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री ग्रार. के. शर्मा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीव है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं धो.वि./एफ.डी./162-83/25849.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. रत चन्द हरजल राय (मोलर्डिंग) प्राo लिंक, 54, इण्डस्ट्रीयल एरिया, फरींदाबाद, के श्रमिक श्री वेद प्रकाश तथा उसके प्रवन्धकों के मृष्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

मौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री वेद प्रकाश की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं भो.वि./एफ.डी./69-84/25856 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं एस के प्रीसैंसर्ज, 22-वी, इण्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद के श्रमिक श्री कालिका प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीग्रोगिक विवाद है;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भविस्चना सं० 5415—3-श्रम −68/15254, दिनोक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए भिध्सूचना सं० 11495—जी-श्रम-57/11245, दिनोंक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त भिधिनियम की घारा 7 के भवीन गठित श्रम न्यांयालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणैय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादपस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

भया भी कालिका प्रसाद की सेवाफ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो.वि:/गुडगावां/70-84/25863.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मैं० राजस्यान ग्राटोमोबाईल, इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, महरोली रोड, गुड़गांवा, के श्रमिक श्री यिजय सिंह तया उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

धोर चुंकि हरियाणा, के राज्यपाल, विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना बोछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीहोगिक विवाद ग्रिप्टिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिप्टिस्चना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, ग्रिप्टिस्चना सं० 11495/जी/श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिप्टिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदावाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिश के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री विजय सिंह की सेवार्यों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है?

संब्शो.िव./गुडगावां/68-84/25870.—चूंकि हिस्याणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. श्रंसल प्रोपर्टीज एण्ड इण्डस्ट्रीज प्रा.िल., पालम रोड, गुड़गावां के श्रमिक श्री जगत सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यताल विवाद को न्यायिनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं :---

इसलिए, भव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त श्रवस्थकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है;

क्या श्री जगत सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो.वि./गुडगांवा/78-84/25877.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राग्र है कि मैं. फलोवेल पलम्बिंग एण्ड फिलटरज क०, मजदीक बस स्टैंड, गुड़गांवा क श्रीमक श्री कनई मजुमदार तथा उसके प्रवधकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायितर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं :—

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रधिसूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक, 7 फर्टजरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदावाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करणे हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित मामला है;

क्या श्रो कनई मजुमदार की सेव भ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो बह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रोवि./2/107-84/25884.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राप है कि मैं० दया नन्द पब्लिक स्कूल, जवाहर कालौनी, फरीदाबाद के श्रमिक श्रीमिति श्रनार देवी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रोर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :---

इस लिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा क राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना, सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधिनियम की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबधन्तों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है;

क्या श्रीमित ग्रनार देवी की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं भो वि./एफ..डी./115 — 84/23891 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. यूनीट्रोद लि० एन.म्राई.टी. फरीदावाद, के श्रमिक श्री सन्त राम तया उसके प्रबग्धकों के मध्य इसनें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीबोगिक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय होतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रधोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी.-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीराबाद, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री सन्त राम की सेवाग्रों का सपामन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार हैं?

सं० म्रा.वि./एफ.डी./32-84/25898.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० करूब म्राटो लि० प्लाट.नं० 111-112, सैक्टर-8, फरीदाबाद,, के श्रमिक श्री कृष्ण नन्दन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रंब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 को घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिनतबों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-6श्र्म15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उन्हें ग्रिविनियम की बारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्दा प्रवन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से बुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री कृष्ण नन्दन की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्तदार है ?

सं॰ मो.वि./एफ..डी./86-84/25905.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ एम॰ सन्ज मैनुटेक इन्डस्ट्रीज प्लाट नं॰ 277 सैक्टर-24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री श्याम कुंवर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनगंय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, को धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त पिधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या जिससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बोच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री श्याम कुंवर की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है :